अनोखे हैं हमारे इतिहास

दक्षिण एशियाई क्वीर और ट्रांस इतिहास का स्रोत

Ministry for Ethnic Communities
Te Tari Mātāwaka

RULE FOUNDATION
rulefoundation.nz

Adhikaar Aotearoa

कॉपीराइट व उद्धरण

स्रोत का कॉपीराइट आओतिरोआ के पास है— © Adhikaar Aotearoa 2024

कलाकृति का कॉपीराइट शोमुद्रो दास के पास है— © Shomudro Das 2024

इस स्रोत के किसी भी हिस्से का इस्तेमाल बिना उपयुक्त श्रेय दिए नहीं किया जा सकता है। इसके लिए अनुशंसित उद्धरण हैं—

बाल, वी (2024)। अनोखे हैं हमारे इतिहास: दक्षिण एशियाई क्वीर और ट्रांस इतिहास का स्रोत। अधिकार आओतिरोआ।

विषयसूची

कलाकृति: मैत्री/वन्धु, कलाकार- शोमुद्रो दास
अधिकार आओतिरोआ के बारे में
परिचय
भूमिका बनाना: औपनिवेशीकरण से पहले दक्षिण एशिया में क्वीर व ट्रांस व्यक्ति
भारी भरकम शब्द "सी": कोलोनाइज़ेशन अर्थात औपनिवेशीकरण
हमारी पहचान
आभार के साथ समापन
उद्धरण

मैत्री/बन्धु, कलाकार- शोमुद्रो दास

मैंने यह कलाकृति क्वीर मैत्री में मौजूद गहराई और सुंदरता दर्शाने की सोच से बनाई थी। बंधु, बन्धु, दोस्त। मैंने अपनी क्वीर मित्रता में जिस मैत्री, अंतरंगता, गर्मजोशी और बिना किसी शर्त के जो प्यार महसूस किया है वह स्वयं से प्रेम और स्वयं स्वीकार्यता में परिवर्तित हो गया है। मैं एक बांग्ला गांव का दृश्य देखना चाहता था, फेनी में मेरा पैतृक घर जिसके चारों ओर मेरे द्वारा चुना गया मेरा परिवार हो। स्वयं को पहले क्वीर के तौर पर स्वीकारने, फिर अश्वेत क्वीर व्यक्ति के तौर पर स्वीकारने और फिर एक अश्वेत ट्रांस क्वीर के तौर पर स्वीकारने की इस यात्रा में उस सांस्कृतिक संपन्नता के आधार का आभाव रहा जो मैं जानता हूं कि अस्तित्व में है लेकिन शायद मेरी पहुंच से बाहर हैं। तो अब यहां बताया जा रहा है, हमारा इतिहास और शायद हमारा भविष्य भी। अपने जानवर दोस्तों के साथ एक होकर,अपने बेहतरीन स्वयं को आत्मसात करना, लिंग या जेंडर आधारित, पितृसत्तात्मक, औपनिवेशिक और पुरुष-महिला के बीच संबंध ही जीने का तरीका हैं, जैसी सोच से ऊपर उठना।

अगर आप इसे करीब से देखेंगे तो आपको दिखेगा: नृत्य करती महिलाओं को उनके संरक्षक संत के तौर पर निहारता हुआ एक किन्नर; मछलियों के समूह का नेतृत्व् करती एक ठाकुर्मा दादी; अलाउद्दीन का क्वीर प्रारूप; चाय पीती और गप्पे मारती हुईं समलैंगिक महिलाएं; निष्काम, रूमानी और सेक्शुअल प्रेमी; परंपराओं को पुनपरिभाषित करते पालकी कहार, समलैंगिक दोस्ती के विभिन्न रूप, संगीत व हंसी ठिठोली, और जेंडर/लिंग की कई अभिव्यक्तियां।

एक बंगाली जेंडर नॉन-कन्फर्मिंग ट्रांस व्यक्ति होने के नाते मेरे पास खुद को परिभाषित करने के लिए सिर्फ अंग्रेज़ी भाषा ही थी। मैंने मेरी भाषा बांग्ला, जिसमें लिंग भेद सर्वनाम नहीं होते, में ढूंढने की कोशिश की लेकिन उसमें एक भी शब्द नहीं था जो मुझे परिभाषित करे। क्यों मैं खुद को 'नॉन बाइनरी' या 'गैर-द्विगुणी' के तौर पर परिभाषित करूं क्योंकि इस परिभाषा में अस्वीकार करना और यथास्थिति के लिए द्विगुणी होना है, जबकि मैं लिंग की अधिकता और विलासिता को समाविष्ट कर सकता हूं, जिसकी कोई सीमा नहीं है और उसे सिर्फ मेरे सांस्कृतिक परिदृश्य में ही परिभाषित किया या समझा जा सकता है?

मैंने यह कलाकृति क्वीर दोस्ती को लेकर बातचीत को बढ़ावा देने की मंशा से बनाई थी, लेकिन इसे पूरा करने तक मुझे यह स्पष्ट हो गया कि जब आप स्वयं को, पूर्ववर्ती ढांचे के भीतर रखकर समझने की कोशिश करते हैं तो आप बेहतर महसूस करने लगते हैं। मेरे लिए, इसका मतलब यह स्वीकार करना था कि मैं अपने क्वीर होने या ट्रांस होने को अपनी अश्वेत पहचान से अलग नहीं कर सकता, और भले ही मेरी भाषा में मुझे परिभाषित या पहचान देने के लिए कोई शब्द नहीं हो लेकिन मेरे जैसे लोग हमेशा से अस्तित्व में रहे हैं। ट्रांस व्यक्ति बहुत खास होते हैं, हमें जो दिया गया था हम कहीं आगे पहुंच चुके हैं, हम जो दिखता है उसके आगे देखने, और कुछ नया, सुंदर व वास्तविक बनाने में सक्षम हैं।

अधिकार आओतिरोआ (माओरी में न्यूज़ीलैंड) के बारे में

इस परोपकार का विचार संजीव की कहानी सुनकर आया। संजीव का जन्म आओतिरोआ न्यूज़ीलैंड में एक भारतीय परिवार में हुआ था और उन्होंने अपने समलैंगिक होने का खुलासा नहीं किया था। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि वह कभी अपने परिवार के सामने इसे स्वीकार नहीं कर पाएंगे क्योंकि अगर उन्होंने ऐसा किया तो जो लोग उन्हें प्यार करते वे उनसे रिश्ता तोड़ लेंगे और दूरी बना लेंगे। बचपन से उनके मन में जो डर बैठाया गया था उसके कारण संजीव ने एक विशेष तरह से जीवन जीने का नाटक किया। उन्होंने महिलाओं को डेट करना शुरू किया, अपने सबसे करीबी दोस्तों के साथ उठना-बैठना बंद कर दिया और खुद को यह समझाया कि अगर उन्होंने लंबे समय तक स्ट्रेट विषमलिंगी की तरह "व्यवहार" करेंगे, तो उनके परिवार वाले उनसे रिश्ता नहीं तोड़ेंगे। संजीव, आओतिरोआ न्यूज़ीलैंड में रहने वाले हज़ारों नहीं तो ऐसे सैंकड़ों दक्षिण एशियाई एलजीबीटी+ लोगों में से एक हैं जो ऐसे अनुभव से गुज़रे हैं।

कई दक्षिण भारतीय भाषाओं में अधिकार का मतलब होता है 'हक'। संजीव को स्वतंत्र होने का अधिकार है, खुलकर प्रेम करने का अधिकार है और जैसे वह हैं वैसे ही रहने का भी अधिकार है। यह संगठन विकसित कर हम एक बार फिर उन्हीं अधिकारों को पुनर्स्थापित कर रहे हैं जो हमारे पूर्वजों के पास थे- बिना किसी डर के क़ीर या ट्रांस होना। यूं तो अधिकार आओतिरोआ में सभी रंग के लोगों का स्वागत है, लेकिन इसमें हम विशेष रूप से दक्षिण एशियाई वंशावली के लोगों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। इस वंशावली में शामिल 8 दक्षिण एशियाई देशों में- अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका शामिल हैं।

अधिकार आओतिरोआ कुल मिलाकर समाज व संगठन के सामान्य माओरी लोगों और व्यवस्थागत बदलाव लाने के बारे में हैं। इसके लिए हम तीन बिंदुओं पर विशेष ध्यान दे रहे हैं: शिक्षा, हिमायत/सिफारिश और समर्थन।

शिक्षा के तहत ज्ञान व जानकारी को ऐसे विकसित, प्रसारित और उपयोग करना जिससे हमारे समुदायों को लाभ पहुंचे। शिक्षा ही वह कुंजी है जो हमारे समुदायों और व्यापक तौर पर कहा जाए तो हमारे समाज में मौजूद जानकारी के अभाव को दूर कर सकती है। शिक्षा की बात करें तो हम चार क्षेत्रों पर ध्यान दे रहे हैं: गैर-श्वेत एलजीबीटी+ लोगों के लिए जानकारी उपलब्ध कराना, गैर-श्वेत एलजीबीटी+ लोगों के परिवारों के लिए जानकारी उपलब्ध कराना, दक्षिण एशियाई समुदाय के बीच एलजीबीटी+ लोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाना, और व्यापक समाज के लिए शिक्षा उपलब्ध कराना।

हिमायत या एडवोकेसी का मतलब होता है जब कुछ गलत हो या स्थिति ठीक हो लेकिन और बेहतर बनाई जा सकती हो, तब किसी एक विशेष मुद्दे के समर्थन में मुखरता के साथ अपने विचार रखना व उसे आगे बढ़ाना। हमारे लिए एडवोकेसी का मतलब अपने समुदायों से बात करना, यह देखना कि उन्हें क्या चाहिए और उनके लिए उसे प्राप्त करना है। हमारे लिए एडवोकेसी यह सुनिश्चित करना है कि जो कार्य हम कर रहे हैं वे व्यापक स्तर पर हो व उनके प्रभाव दीर्घकाल तक रहें, और वे दुनिया से हमारी उम्मीद को व्यक्त करने के साथ ही बदलाव लाने का वादा करें।

समर्थन या साथ, यह सुनिश्चित करना है कि जब किसी को आपकी ज़रूरत हो तब आप उसके साथ हों। यह एक जुड़ाव की भावना के साथ सुनने, ध्यान रखने, प्रोत्साहित करने और संगठित करने और क़ीर राजनीति में साझा दिलचस्पी के बारे में है। यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि जब किसी को रिश्ते/साथी की तलाश हो तो कोई भी खुद को अकेला या अलग-थलग पड़ा महसूस नहीं करे। यह खुद को आत्मसात करने की यात्रा किसी के साथ तय करने के बारे में है।

हम घरेलू व अंतरराष्ट्रीय स्तर (विशेष तौर पर दक्षिण एशिया व प्रशांत क्षेत्र, जहां दक्षिण एशियाई वंशावली वाली काफी आबादी है) पर भी सक्रिय हैं और ऐसी परिस्थितियां विकसित करते हैं कि हमारे लोग ना सिर्फ अपना अस्तित्व बचा सकें बल्कि उन्नति भी कर सकें। हम कभी नहीं रूकेंगे।

परिचय

जब हम सोच रहे थे कि हम किस प्रकार के संसाधन विकसित करना चाहते हैं, तब हमने अधिकार रिपोर्ट को पढ़ने का फैसला किया जिससे हम यह समझ सकें कि हमारे समुदाय के अनुसार उनके समक्ष मौजूद सबसे बड़ी समस्याएं क्या थीं। इनमें से सबसे बड़ी समस्या जो सामने आई वह थी- हमारे दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस समुदाय का उन जातीय व धार्मिक समुदायों में भेदभाव का सामना करना जिनका वे हिस्सा हैं।

इस भेदभाव का कारण एक महत्वपूर्ण धारणा के आसपास घूमता है: दक्षिण एशियाई गे, ट्रांसजेंडर, लेस्बियन या क्वीर व ट्रांस समुदाय का हिस्सा नहीं हो सकते क्योंकि क्वीर या ट्रांस होना 'श्वेत लोगों की समस्या/से जुड़ा' है। दक्षिण एशियाई मूल का होकर क्वीर या ट्रांस होना नामुमकिन है।

लेकिन हम सभी जानते हैं कि यह सच नहीं है।

सच्चाई तो यह है कि हमारे जातीय और धार्मिक समुदायों में क्वीर व ट्रांस लोगों का अस्तित्व हमेशा से रहा है। औपनिवशीकरण से पहले, दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस लोगों को स्वीकार किया जाता था, उन्हें प्रेम और सम्मान दिया जाता था। लेकिन औपनिवशीकरण के बाद, क्वीर लोगों के प्रति प्रेम व उत्साह से भरा रहने वाला माहौल घृणा व आपराधीकरण से भर गया। औपनिवेशीकरण ने हमारे जातीय व धार्मिक समुदायों को ही हमारा विरोधी बना दिया।

एक अन्य सच्चाई यह भी है कि दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस होने के नाते हम, घृणा व आपराधीकरण की इस यथास्थिति को अब और स्वीकार नहीं करेंगे। हम स्वीकार्यता, प्रेम और सम्मान के अपने इतिहास पर एक बार फिर दावा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा हम करेंगे कैसे?

इसकी दिशा में पहला कदम है हमारे इतिहास को समझना, यह समझना कि हमारे क्वीर व ट्रांस पूर्वज कैसे दिखते थे। यह सामग्री इसी के बारे में है।

यह सामग्री आपके लिए है- दक्षिण एशियाई क्वीर और ट्रांस। इसका उद्देश्य हमारे स्वदेशी इतिहास में आपकी और आपकी पहचान की पुष्टि करना है।

यह सामग्री हमारे आसपास रहने वाले- हमारे जातीय व धार्मिक समुदायों, के लिए है। उन्हें यह समझना होगा कि क्वीर या ट्रांस होना "श्वेत लोगों की समस्या" नहीं है, वास्तविकता है कि यह हमारे मूल देशों के इतिहास का हिस्सा है।

इस सामग्री में हम जिन इतिहासों व पहचानों पर चर्चा करेंगे वे किसी को अलग-थलग नहीं करती हैं। हमारे पास वर्तमान में जो कुछ संसाधन उपलब्ध हैं उनके ज़रिए इन इतिहासों को दूर से समझने का हमारा यह पहला प्रयास है। हम यह अच्छी तरह समझते हैं कि इतिहास सिर्फ उन तक सीमित नहीं है, ये एक पहला कदम है क्योंकि हमारे इतिहास असीमित व बहुआयामी हैं।

इससे पहले कि हम इस सामग्री में आगे बढ़ें, हम शुरुआत में कुछ प्रारंभिक बिंदुओं के बारे में बताना व आभार जताना चाहते हैं। सबसे पहले, हमारा लक्ष्य जितना संभव हो सके उतनी स्वदेशी शब्दावली का उपयोग करेंगे। हालांकि, तुलना, सुविधा और समूह के लिए हम क्वीर व ट्रांस जैसे पश्चिमी शब्दों का उपयोग करेंगे। इसका मतलब यह नहीं मान लेना चाहिए कि हम उन्हें केंद्र में रख रहे हैं।

हम आओतिरोआ ज़मीन के लोगों का आभार जताना चाहते हैं। हम विशेष रूप से वाइकाटो तैनुई का आभार जताते हैं जिनकी ज़मीन पर अधिकार आओतिरोआ स्थापित है और जिनके प्रतिरोध के

इतिहास और साहस की हम बहुत प्रशंसा करते हैं। हम यह भूले नहीं हैं कि हम आज यहां आपकी उदारशीलता के कारण ही हैं। हम वेतांगी संधि के उद्देश्यों को हासिल करने में हमेशा सहयोग देंगे।

हम किरण पटेल और डॉ. कायत्री दिवकालाला का आभार जताना चाहते हैं जिन्होंने इस सामग्री की समीक्षा, संपादन और इसे बेहतर बनाने में मदद की है। आप दोनों शब्दों की जासूस हैं और हम आपकी पैनी नज़र और बुद्धिमता के लिए आभारी हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि अधिकार आओतिरोआ में हमारे साथ प्रेरित, योग्य और बदलाव लाने पर केंद्रित लोग हैं।

हम शोमुद्रो दास के आभारी हैं जिन्होंने उनकी इस बेहद खूबसूरत कलाकृति को इस्तेमाल करने की अनुमति हमें दी। हमारे लिए, शोमुद्रो की यह कलाकृति दक्षिण एशियाई क्वीर और ट्रांस अनुभव के ऐतिहासिक तत्वों को बहुत सुंदरता के साथ दर्शाती है। हम पहली नज़र में ही इस कलाकृति को देखकर बहुत प्रभावित हो गए थे और तुरंत समझ गए थे कि यह हमारी इस सामग्री के थीम के साथ बखूबी मेल खाती है। शोमुद्रो, हम दिल की गहराई से आपका आभार जताते हैं।

हम हमारे उदार दानकर्ता मिनिस्ट्री ऑफ एथनिक कम्युनिटीज़ और द रूल फाउंडेशन का भी आभार जताते हैं। हमें इस सामग्री के लिए एथनिक कम्युनिटीज़ डेवलपमेंट फंड के ज़रिए वित्तीय मदद मिली थी। हम इस सहयोग के लिए आभार जताते हैं और दिल से इसकी प्रशंसा करते हैं।

द रूल फाउंडेशन, एक संस्था है जिसकी स्थापना रॉयल न्यूज़ीलैंड एयर फोर्स के पायलट पीटर रूल की संपत्ति की देखरेख के लिए की गई थी। पीटर से जबरदस्ती वह नौकरी छुड़वाई गई जिसे वह बहुत पसंद करते थे और समलैंगिक पुरुष होने की वजह से समाज द्वार शर्मसार किए जाने के बाद आखिरकार उन्होंने आत्महत्या कर ली। पीटर रूल की कहानी का ऐसा अंत नहीं होना चाहिए था; उनकी कहानी का अंत कुछ ऐसा होना चाहिए था जिसमें उन्हें प्रेम, उत्साह और उद्देश्य मिला, एक ऐसा अंत जहां वे वास्तव में खुद को ज़ाहिर कर सकते थे। हम जो कार्य कर रहे हैं उस पर पीटर की यादों की अमिट छाप है। हम इसलिए यह काम कर रहे हैं ताकि जैसी कहानी उनकी रही वह किसी अन्य की नहीं हो विशेष तौर पर उनकी जो जातीय एलजीबीटी+ समुदायों से ताल्लुक रखते हैं, जिससे वे वैसा जीवन जी सकें जो उन्हें जीना चाहिए।

इन दोनों संस्थाओं से मिली वित्तीय मदद के बिना यह सब कर पाना संभव नहीं था। हम दिल से आपका आभार जताते हैं।

भूमिका बनाना: औपनिवेशीकरण से पहले दक्षिण एशिया में क्वीर व ट्रांस व्यक्ति

इस अध्याय में हम नज़र डालेंगे कि औपनिवेशीकरण से पूर्व काल के दौरान दक्षिण एशिया में क्वीर और ट्रांस लोगों का जीवन कैसा था। ऐसा करने के कुछ कारण हैं। पहला, अपने इतिहास को खंगालने पर हमें यह समझ आता है कि समलैंगिक, ट्रांस और क्वीर विरोधी विचार औपनिवशीकरण के साथ आए हैं; वे हमारे इतिहास का हिस्सा नहीं हैं।

दूसरा, यह हमें एक लक्ष्य देता है। हम आगे चर्चा करेंगे कि उस काल के दौरान भी क्वीर व ट्रांस व्यक्तियों के लिए सब कुछ अच्छा-अच्छा नहीं था। लेकिन तब हमारे समुदायों में हमें लेकर जो स्वीकार्यता थी वह आज के मुकाबले अधिक थी। इसका लक्ष्य हमारे समुदायों को स्वीकार्यता के इतिहास को दोबारा स्वीकार करवाना है और दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस होने के नाते हमारे लिए इसका मतलब अपने इतिहास पर पुन: दावा करना है।

तीसरा कारण, जैसा हम पहले बता चुके हैं कि हम और दुनिया हमारा इतिहास जाने यह बहुत आवश्यक है क्योंकि हमारे इतिहास दिखाते हैं कि क्वीर और ट्रांस पहचान "श्वेत लोगों की बात" नहीं है। दक्षिण एशिया में क्वीर व ट्रांस व्यक्ति शुरुआत से ही हैं।

यूरोपीय लोगों द्वारा दक्षिण एशिया को उपनिवेश बनाए जाने से पहले दक्षिण एशियाई संस्कृतियों में विविध सेक्शुएलिटीज़/ लैंगिकता और लिंग के लोगों को स्वीकार और शामिल किया जाता था। वास्तविकता यह है कि औपनिवेशीकरण से पहले इस समुदाय के साथ सक्रिय भेदभाव होने का कोई भी प्रमाण नहीं मिला सिवाय मुगल साम्राज्य के दौरान दमनकारी काल के। इससे हम यह समझ सकते हैं कि पूर्व औपनिवेशिक काल में क्वीर या ट्रांस होना खराब नहीं माना जाता था बल्कि इन्हें सम्मान दिया जाता था जिस पर हम बाद में चर्चा करेंगे।

हमारे इतिहास के कई हिस्सों में स्वीकार्यता का यह भाव देखा जा सकता है। हमने नीचे इनमें से कुछ के बारे में बात की है। ऐसा करने से पहले, हम एक बात स्पष्ट करना चाहते हैं कि यूं तो इतिहास में हमारी पहचान को स्वीकायर्ता मिली लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि आज के आधुनिक युग में ऐसी पहचानों के खिलाफ भेदभाव नहीं हुआ। हमारे समुदायों को गंभीर भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है और स्वीकार्यता की इन कहानियों को बताने की मंशा उस क्षति को कमतर दिखाने की नहीं है जिसका सामना इन्हें करना पड़ रहा है।

यह स्वीकार्यता...

...उपमहाद्वीप के हमारे मंदिरों पर उकेरी गई थी

आपको क्वीर और ट्रांस लोगों की उकेरी गई तस्वीरें देखने के लिए बहुत दूर दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के मंदिरों और गुफाओं तक यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है। इनमें से कुछ मंदिर 885 ईसवी में बनवाए गए थे, जिसका मतलब है कि दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस लोगों का अस्तित्व 1000 साल से भी अधिक समय से है। ऐसी नक्काशियां दक्षिण एशिया में भारत और श्रीलंका में कई जगहों पर देखने को मिलती हैं और इनमें क्वीर व ट्रांस लोगों को विभिन्न समलैंगिक उत्तेजक कृत्य करते हुए

दर्शाया गया है। इनमें एक-दूसरे से लिपटी महिलाएं, एक-दूसरे को मुख मैथुन देते पुरुष, और सामूहिक यौन कृत्य दर्शाए गए हैं- हमारे पूर्वज काफी निरंकुश थे, है ना?

...हमारे पूर्वजों की कविताओं में बताया गया है

हमारे पूर्वजों ने अपनी यौन व लैंगिक विविधता के बारे में कविताएं भी लिखी हैं। इन कविताओं को हमारे मौखिक इतिहास के साथ ही लिखित सामग्री के ज़रिए सहेजकर रखा गया है। क़ीर काव्य का एक सबसे लोकप्रिय प्रकार था उर्दू प्रारूप रेख्ती, जिसका लहजा स्त्रीवादी होता था और इसमें यौन कृत्यों का बहुत स्पष्ट तरीके से उल्लेख किया जाता था। ऐसे कुछ काव्यों में एक महिला द्वारा अपनी प्रेमी महिला को संबोधित करने के लिए दोगन शब्द का इस्तेमाल किया गया है जबकि महिलाओं के बीच यौन कृत्यों के बारे में बताने के लिए चपटी शब्द इस्तेमाल होता था जिसका मतलब होता है रगड़ना/चिपकना। इन कविताओं को उनके बाद आई पीढ़ियों ने काफी पूजनीय माना।

...हमारी धार्मिक व सांस्कृतिक पौराणिक कथाओं में बताया गया है

दक्षिण एशिया पहले भी धर्मों और संस्कृतियों के मिलन का केंद्र था और आज भी है। हमारे सभी धर्मों व संस्कृतियों में कभी न कभी हमारे अस्तित्व को स्वीकारा गया है।

संस्कृत में लिखे महाकाव्य रामायण में उल्लेख किया गया है कि जब राजा राम वनवास के लिए निकले, तब अयोध्या के लोग भी उन्हें विदा करने के लिए उनके पीछे पीछे चलने लगे। राजा राम ने उनके पीछे आए महिलाओं और पुरुषों को अयोध्या लौट जाने को कहा। हालांकि, जब वह 14 साल के वनवास के बाद लौटकर अयोध्या आए, और नदी पार की तो वहां उन्हें कई लोग दिखे। उन्होंने हैरान होकर उन लोगों से पूछा कि जब उन्होंने सभी को अयोध्या लौटने के लिए कह दिया था तो वे लोग वहीं क्यों रुके रहे। इस पर उन लोगों ने जवाब दिया कि महिलाएं व पुरुष तो अयोध्या लौट गए लेकिन चूंकि वे उनमें शामिल नहीं थे (वे हिजड़े/मध्यलिंगी थे) इसलिए वे रुक गए। राजा राम ने उनके समर्पण से प्रभावित होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। राम द्वारा दिए गए आशीर्वाद के कारण ही हिजड़ों को नवजात के जन्म पर या शुभ अवसरों पर आशीर्वाद देने में सक्षम माना जाता है। हम शब्द 'हिजड़े' के बारे में अध्याय तीन में विस्तार से बताएंगे।

कथासरितसागर, नामक संस्कृत की एक अन्य कथा में एक अन्य महिला को देखते ही उस पर मोहित होने वाली एक युवा महिला उन दोनों के रिश्ते को "स्वयंवर सखी" का नाम देती है यानी स्वयं के द्वारा चुनी गई सखी। पश्चिमी शब्दावली में इसे लेस्बियन रिश्ता कहा जा सकता है।

हिंदू पौराणिक कथाओं में क़ीर और ट्रांसजेंडर या ट्रांससेक्शुएलिटी के बारे में कुछ कहानियां हैं। दक्षिण भारत की पौराणिक कथाओं के अनुसार, पुरुष देव अयप्पा का जन्म भगवान शिव और भगवान विष्णु के बीच बने समलैंगिक संबंध से हुआ था। इसी तरह, ऐसे कई हिंदू देवता हैं जिनमें उभयलिंगी और

इंटरसेक्स गुण दिखते हैं। इनमें से सबसे प्रसिद्ध है अर्धनारीश्वर (जिसका अर्थ है आधा पुरुष और आधी नारी)।

इस्लाम में एतिहासिक रूप से चार से पांच लिंग व सेक्स को मान्यता दी गई थी जिनमें पुरुष, महिला, इंटरसेक्स (खुनसा) और स्त्रीवत/स्त्रैण पुरुष (मुखन्नाथ)। इस तरह, समसामयिक इस्लाम में जब लिंग व सेक्स भूमिकाएं पुरुष व महिला तक ही केंद्रित हैं वहीं ऐतिहासिक इस्लाम निश्चित तौर पर लिंग व सेक्स की बहुसंख्या को मान्यता देता था।

...जैसा हमारी किताबों में बताया गया है

हमारे लिखित ग्रंथों में क्वीर और ट्रांस चरित्र से जुड़ी कहानियों का उल्लेख है। इसके कई उदाहरण हैं, जिनमें संस्कृत में रचित कुछ महाकाव्य भी शामिल हैं, जिनके बारे में हम ऊपर बता चुके हैं। हालांकि, हम जानते है। कि विशिष्ट रूप से बहुत प्रसिद्ध एक ग्रंथ है कामसूत्र। कामसूत्र 400 ईसा पूर्व और 200 ईसवी के दौरान लिखा गया था जिससे संकेत मिलते हैं कि इसमें जिन पहचान और कृत्यों के बारे में बताया गया है, वे करीब 2000 साल से अस्तित्व में हैं। अगर इससे पुष्टि नहीं होती है कि हमारी पहचान प्राचीन काल से है तो हमें नहीं पता कि यह साबित करने के लिए और क्या प्रमाण चाहिए। इसके रचियता, वात्स्यायन एक तीसरी लिंग श्रेणी तृतीया प्रकृति के बारे में बताते हैं। अगर तृतीया प्रकृति महिला का रूप लेती है तो उन्हें स्त्रीरूपी (पश्चिमी शब्दावली में ट्रांसजेंडर महिला) कहा जाता है। वहीं, तृतीया प्रकृति अगर पुरुष का रूप ले तो उसे पुरुषरूपिणी कहा जाता है। कामसूत्र में क्वीरनेस का भी उल्लेख है। इसमें पूरा एक अध्याय औपरिष्टक (मुख मैथुन) को समर्पित है, जिसमें दो पुरुषों के बीच यह कृत्य होने का संक्षिप्त ज़िक्र है! इससे पता चलता है कि ऐसा यौन व्यवहार बहुत सामान्य था।

बौद्ध ग्रंथ विनय पिताका, जिसमें भगवान बुद्ध के उपदेश हैं, में खुलासा किया गया है कि पुरुष और महिला के अलावा भगवान बुद्ध मानते थे कि दो अन्य लिंग एवं यौन पहचान हैं। पहली, उभतोब्यारीजनक, ऐसे लोग जिनमें पुरुष व महिलाओं दोनों के चरित्र होते थे (पश्चिमी शब्दावली में शायद इंटरसेक्स)। दूसरी, पांडक, ऐसे लोग जो होते तो पुरुष थे लेकिन उनकी यौन प्रवृति में कुछ कमियां थीं और उन्हें आगे भी किसी श्रेणी में रखे जाने की संभावना थी। उदाहरण के लिए उस्सुयापांडक, ऐसा पुरुष होता था जिसे अन्य पुरुष के वीर्य को निगलकर यौन संतुष्टि मिलती थी। ओपक्कामिकापांडक, वह पुरुष कहलाता था जिसके अंडकोष निकाल दिए गए हों। पाक्खापांडक, वह व्यक्ति कहलाता था जो चंद्रमा की दशा के अनुरूप कामोत्तेजित होता था! आखिर में, नपुंसकपांडक, वह व्यक्ति होता था जिसका गुप्तांग स्पष्ट नहीं होता था (पश्चिमी शब्दावली में इंटरसेक्स)।

...हमारे धर्मों में बताई गईं

हमारे उपमहाद्वीप में कई धर्मों में क्वीर और ट्रांस लोगों के प्रति स्वीकार्यता दिखाई है और कई रूढ़िवादी व्याख्यायाओं के बावजूद आज भी स्वीकार्यता दिखाते हैं।

जैन धर्म, व्यक्ति की शारीरिक संरचना और उनकी पहचान को अलग मानता है। यह सेक्स को शारीरिक संरचना के आधार पर परिभाषित (द्रव्यलिंग) करता है और लिंग को सामाजिक तौर पर

परिभाषित (भावलिंग) करता है। सेक्स और लिंग के बीच अंतर को पश्चिमी मेडिकल थ्योरी का परिणाम माने जाने के बावजूद दुनिया के सबसे पुराने धर्मों में से एक जैन धर्म काफी समय से इस अंतर को मान्यता दे रहा है।

बौद्ध व हिंदू धर्म ऐतिहासिक रूप से लिंग का तीन तरीकों से वर्गीकरण किया है, जिनमें से कोई भी विशिष्ट लिंग पहचान के संबंध में नहीं है। पहला, पुरुष, जिसकी पहचान गुप्तांग चरित्र (उदाहरण के लिए शिश्न/लिंग या योनि) की उपस्थिति या अभाव। दूसरा, स्त्री, यह व्यक्ति में प्रजनन क्षमता होने का संकेत होता था। तीसरा, नपुंसक, जो संबंधित व्यक्ति के नपुंसक होने का संकेत देता था। लिंग का वर्गीकरण करने के ये अलग तरीके दर्शाते हैं कि किसी समाज में द्विगुण सेक्स और लिंग ही वर्गीकरण के तरीके नहीं है, विशेष तौर पर पश्चिमी समाज में जो हमें वर्तमान में दिखता है।

प्रतिष्ठित भूटानी बौद्ध शिक्षक ज़ोंगसार खिंतसे रिनपोचे ने बौद्ध धर्म में लिंग एवं यौन/सेक्शुअल विविधता की स्वीकार्यता को लेकर कहा है: "यौन संबंधों में आपका रुझान किस तरफ है इसका सत्य को समझने या नहीं समझने से कोई लेनादेना नहीं है। आप समलैंगिक पुरुष, समलैंगिक महिला हो सकते हैं या इतरलिंगी हो सकते है- हम नहीं जानते कि इनमें से ज्ञान की प्राप्ति पहले किसे होगी। सहनशीलता अच्छी बात नहीं है। अगर आप इसे सहन कर रहे हैं, तो इसका मतलब है कि यह कुछ गलत है जिसे आप सह लेंगे। लेकिन आपको इससे आगे बढ़ना है- आपको सम्मान देना है।"

...हमारी भाषा में बताई गई

दक्षिण एशिया के कई हिस्सों में कई भाषाएं हैं जो क्वीर या ट्रांस की प्रवृति का विवरण देती हैं। हम अध्याय तीन में भाषाओं के बारे में और बात करेंगे लेकिन एक छोटी झलक के तौर पर उर्दू के कुछ शब्दकोशों में दोगन और ज़नाखी शब्दों का अर्थ है महिला द्वारा स्वयं चुनी गई मुख्य महिला दोस्त (पश्चिमी शब्दावली में एक लेस्बियन महिला की गर्लफ्रेंड/पार्टनर)। दक्षिण एशिया के कुछ हिस्सों में खुद की विशिष्ट शब्दावली नहीं है लेकिन उन्होंने दक्षिण एशिया के अन्य हिस्सों से शब्दावली उधार ली है—आखिरकार इस उपमहाद्वीप का एक साझा इतिहास है, और ऐसा करना तार्किक भी है। यहां इस बात पर ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है कि हमारी कई भाषाओं जैसे बांग्ला और तमिल में लिंग भेद नहीं है।

यह आदर्श लोक नहीं था, लेकिन...

जैसा कि हमने अभी तक ज़ोर दिया है, निश्चित रूप से क्वीर व ट्रांस पहचान को लेकर आमजन में स्वीकार्यता थी। यहां तक कि दमनकारी काल और विविधता की असम्मति वाले काल, जब दक्षिण एशिया का अच्छा खासा हिस्सा मुगल साम्राज्य के नियंत्रण में था, में भी क्वीर व ट्रांस व्यक्तियों को कानूनी कार्रवाइयों का सामना नहीं करना पड़ा था। इस काल के कुछ बादशाहों व नेताओं के समलैंगिक होने की भी अफवाहें थीं और उन पर किसी प्रकार की कोई पाबंदी नहीं थी।

हमने देखा है कि कुछ लोग औपनिवेशीकरण से पहले दक्षिण एशिया में लिंगरहित समाज होने के बारे में बात करते हैं। हालांकि, हम निश्चित तौर पर नहीं कह सकते कि यह ऐसा था और हम जानते हैं कि दक्षिण एशियाई समाज मुख्य रूप से द्विगुणी पुरुष व महिला सेक्स और लिंग के ईर्दगिर्द ही व्यवस्थित था। इसके बावजूद, द्विगुणी सेक्स और लिंगों को श्रेष्ठ या जीने का "सामान्य" तरीका नहीं माना गया। यौन एवं लिंग विविधता को समाज के ढांचे में शामिल किया गया और इसमें बाहुल्य था जिसने सभी को उनके अस्तित्व के साथ जीने में सक्षम बनाया।

भारी भरकम शब्द "सी": औपनिवेशीकरण

जब दक्षिण एशिया को यूरोपीय लोगों ने अपना उपनिवेश बनाया तब वे अपने साथ सेक्स और जेंडर यानी लिंग से जुड़े अपने सीमित विचार भी साथ लाए। वे सोचते थे कि सेक्स और जेंडर का मतलब सिर्फ पुरुष व नारी ही हो सकता है और इन दोनों के बीच यौन संबंध ही जीवन जीने का उपयुक्त तरीका है। कई सदियों के दौरान, औपनिवेशीकरण के कारण हमारे समुदायों व परिवारों में हमें मिलने वाली स्वीकार्यता को परिवर्तित कर उसे भेदभाव और हिंसा बना दिया जिसका 21वीं सदी में हमें सामना करना पड़ा।

औपनिवेशीकरण के क्वीर व ट्रांस विरोधी विचारों को अक्सर कानून के ज़रिए व्यक्त किया गया। उदाहरण के लिए, भारत में अंग्रेज़ "व्यक्ति के खिलाफ अपराध अधिनियम 1861" लेकर आए, जिसके तहत पुरुषों के बीच समलैंगिक संबंधों को फौजदारी अपराध बना दिया गया और इस अपराध की सज़ा जेल होती थी। इसी तरह का कानून अंग्रेज़ों द्वारा श्रीलंका में भी लागू किया गया था। श्रीलंका के स्वतंत्र होने के बाद वहां के कानून निर्माताओं ने तय किया कि यह कानून भेदभावपूर्ण है, लेकिन इसका कारण वह नहीं है जो शायद आप सोच रहे हैं। उन्होंने इस कानून में एक नया प्रावधान जोड़ा जिसके तहत महिलाओं के बीच समलैंगिक संबंधों को भी अपराध की श्रेणी में रख दिया गया।

इनमें से कुछ समलैंगिक विरोधी कानूनों को निरस्त कर दिया गया है। उदाहरण के लिए, नेपाल ने 2007 में, भूटान ने 2021 में और भारत ने इन्हें 2018 में समाप्त कर दिया था। हालांकि, बांग्लादेश, पाकिस्तान और श्रीलंका में आज भी ये दमनकारी कानून अस्तित्व में हैं। अफगानिस्तान और मालदीव में समलैंगिक संबंधों को रीति-रिवाजों पर आधारित कानून के लिहाज़ से अवैध करार दिया गया है।

अन्य कानूनों के ज़रिए भी सेक्शुएलिटी और जेंडर को लेकर औपनिवेशी विचारों को व्यक्त किया गया। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ों ने भारत में आपराधिक जनजाति अधिनियम 1871 पारित किया, जिसने हिजड़ों के दमन में मदद की। इस कानून के तहत हिजड़ों को पंजीकरण कराना होता था, खुद की निगरानी की अनुमति देनी होती थी और उनके जन्म से ही उन्हें "आपराधिक जनजाति" करार दे दिया जाता था।

श्रीलंका में अंग्रेज़ों ने 1841 में खानाबदोश अध्यादेश पारित किया, जिसका इस्तेमाल कर औपनिवेशिक अधिकारी ट्रांसजेंडर व्यक्तियों विशेषतौर पर ट्रांस महिलाओं की गिरफ्तारी करते व उन्हें हिरासत में लेते थे। साल 1852 में भारत में एक अन्य कानून पारित किया गया जिसके तहत उनकी ज़मीन या आवास ज़ब्त किए जा सकते थे, कम से कम मुंबई क्षेत्र में। यह बात ध्यान देने योग्य है कि औपनिवेशिक काल से पहले दक्षिण एशिया में ऐसे कानून नहीं थे।

इन औपनिवेशिक विचारों को व्यक्त करने का एक अन्य तरीका था किताबों पर प्रतिबंध लगाना, उनका पुनर्लेखन करना और उन्हें जलाना। पूरे दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप औपनिवेशकों ने ऐसी किताबों को नष्ट कर दिया जो उनके अनुसार 'अश्लील' थीं, विशेषतौर पर ऐसी किताबें जिनमें समलैंगिक संबंधों या क्वीर व ट्रांस लोगों से जुड़ी सामग्री होती थी। उन्होंने मुगलकाल के दौरान लिखी गईं कई ऐसी कविताओं का भी पुनर्लेखन किया जिनमें समलैंगिक संबंधों का उल्लेख था।

औपनिवेशीकरण के कारण कुछ चीज़ें हुईं। इसके कारण हमारे समुदाय हमें असामान्य व बाहरी मानने लगे, जिससे हम भी खुद को असामान्य व बाहरी के तौर पर ही देखने लगे। औपनिवेशीकरण ने पारंपरिक तौर पर स्वीकार्य माहौल को समलैंगिकों, ट्रांस और इंटरसेक्स लोगों के प्रति भेदभावपूर्ण बना दिया।

सही कहा जाए तो, आज भी हम में से कुछ को अब भी औपनिवेशीकरण से पूर्व काल वाले नज़रिए से ही देखा जाता है इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि औपनिवेशीकरण ने हमें देखने के हमारे समुदायों के नज़रिए को पूरी तरह बदल दिया है। उदाहरण के लिए, हिजड़ों का जहां भेदभाव का सामना करना पड़ा लेकिन ऐतिहासिक तौर पर लोगों को आशीर्वाद देने की उनकी शक्ति या योग्यता के लिए उनका सम्मान किया जाता था और यह सम्मान उन्हें आज भी मिलता है।

हमारी पहचान

इस सामग्री के इस हिस्से में हम दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस लोगों के संदर्भ में अस्तित्व में मौजूद विभिन्न पहचानों पर नज़र डालेंगे। इसे शुरू करने से पहले हम कुछ महत्वपूर्ण बातें बताना चाहेंगे।

हमने जिन निम्नलिखित पहचानों पर चर्चा की है उनमें से कुछ में ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग तीसरा पक्ष दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस के संबंध में करता है। कुछ पहचान ऐसे शब्दों का उपयोग करती हैं जिनसे हमारे पूर्वज खुद को परिभाषित करते थे। कुछ पहचान ऐसी हैं जिनके लिए इस्तेमाल होने वाले शब्दों का आशय अपमानजनक है लेकिन अब उन पर पुन:दावा कर दिया गया है। विभिन्न लोगों के लिए विभिन्न शब्दों के अलग-अलग मायने हो सकते हैं।

इसके अलावा, इस भाग का इस्तेमाल दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस पहचान की समग्र सूची के रूप में नहीं होना चाहिए क्योंकि हमें भरोसा है कि कुछ ऐसी पहचान हैं जो हमसे छूट गई हैं।

इसके अलावा, हमारे लिए यह बताना बहुत महत्वपूर्ण है कि इनमें से कई शब्द ऐसे हैं जिन्हें पश्चिमी नज़रिए से समझाना हमारे लिए बहुत मुश्किल होगा। उदाहरण के लिए, किसी दक्षिण एशियाई शब्द के साथ गे (समलैंगिक पुरुष) या ट्रांस शब्द बहुत सटीक नहीं बैठ सकता है। इसमें कुछ गलत नहीं है। हमारी भाषाओं और शब्दावलियों के अलग-अलग अर्थ होते हैं और हमें इसे स्वीकार करना होगा। हम यह भी बताना चाहते हैं कि पहचानों के बारे में यह भाग उपलब्ध कराने का कारण हमारे पूर्वजों द्वारा उनके सेक्स, लिंग एवं सेक्शुएलिटी का विवरण देने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा को समझने की मंशा है। हम इसके ज़रिए ऐसा सुझाव बिलकुल नहीं दे रहे हैं कि हम सभी को इसी भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए(हालांकि अगर आप ऐसा करना चाहें तो कोई आपको रोकेगा नहीं) और पश्चिमी शब्दों का उपयोग बंद कर देना चाहिए।

हम जानते हैं कि क्वीर व ट्रांस समुदाय में विऔपनिवेशीकरण को लेकर काफी बहस चल रही है और कई लोगों के अनुसार इसका मतलब है कि हमें पश्चिमी लेबलों की जगह अपनी स्वदेसी शब्दावली को अपनाने की आवश्यकता है। हमारा मानना है कि यहां सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हमारा समुदाय अपनी इच्छा के अनुसार खुद को परिभाषित कर सकता है। अगर वे अपनी स्वदेशी भाषा का इस्तेमाल करना चाहते हैं, बहुत शानदार। हालांकि, अगर वे क्वीर व ट्रांस जैसे शब्दों का इस्तेमाल करना चाहते हैं क्योंकि ये शब्द उनके लिए मायने रखते हैं तो यह भी अच्छी बात है। हमारा मानना है कि हमारे स्वदेशी शब्दों की ही तरह क्वीर व ट्रांस जैसे पश्चिमी लेबल भी खूबसूरत हैं। हमारे समुदाय ने अक्सर स्वयं को परिभाषित करने के लिए इन शब्दों का उपयोग किया है क्योंकि उनकी स्वदेशी भाषा में ऐसे शब्दों का अभाव था जो उनके अनुभवों का विवरण दे सकें, और हम इसका सम्मान करते हैं।

दक्षिण एशियाई क्वीर व ट्रांस की पहचान बताने के लिए जिन शब्दों का उपयोग किया गया है उनके बारे में हमें एक बहुत दिलचस्प बात पता चली है कि अक्सर ये शब्द एक ही साथ सेक्स, लिंग, लैंगिंक गुण, और सेक्स पोज़ीशन (उदाहरण, नीचे या ऊपर) जैसी जानकारी दे सकते हैं! इस मामले में हमारी भाषा बहुत अनूठी है कि एक ही शब्द के कई सारे मायने निकल सकते हैं।

आगे बढ़ते हुए जब हम नीचे इन पहचानों पर चर्चा करेंगे तब हम अलग-अलग देश के नज़रिए से इन्हें देख रहे होंगे क्योंकि इसे व्यवस्थित करने का यह आसान तरीका है। हमने सभी पहचानों के लिए ऐसा किया है सिर्फ हिजड़ों को छोड़कर क्योंकि यह पहचान एक ही सीमा तक सीमित नहीं है। जब हम ऐतिहासिक व आधुनिक काल की तुलना करते हैं तो इसका उद्देश्य आधुनिक काल के महत्व को कम करना नहीं है। अक्सर, आधुनिक शब्द ऐसे तरीके दर्शाते हैं जो कई सदियों से हमारे आसपास मौजूद थे।

हिजड़ा

हिजड़ा, एक व्यापक शब्द है जो इंटरसेक्स, ट्रांसजेंडा और/या नपुंसक लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह यह लिंग को सेक्स विशेषता से जोड़ता है। इस शब्द का उपोग भारत, नेपाल और बांग्लादेश में होता है।

हिजड़े स्त्रैण होते हैं- ये तीसरे लिंग के व्यक्ति होते हैं, जिसका मतलब है कि वे खुद को पुरुष या महिला के तौर पर नहीं पहचानते हैं। हम यहां "तीसरा लिंग" शब्द का इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि यह हमारे शोध में सामने आए खुलासों को दर्शाता है लेकिन हम यह भी स्वीकारते हैं कि यह बेहद विवादित शब्द है। हिजड़ों को जन्म के समय पुरुष माना जाता है और उन्हें स्त्रैण रूप में पेश किया जाता है।

जैसा कि ऊपर विस्तार से बताया गया है कि संस्कृत में लिखी पौराणिक कथाओं के अनुसार हिजड़ों को उनकी निष्ठा और दृढ़ता के लिए भगवान राम से आशीर्वाद मिला था। इन आशीर्वाद में नवविवाहित जोड़े को प्रजनन का आशीर्वाद देना और 'बधाई' की प्रक्रिया में नवजात को आशीर्वाद देना शामिल है।

निर्वाण (सर्जरी के ज़रिए लिंग की पुष्टि कराने की प्रक्रिया) से गुज़रने वाले हिजड़ों को अक्कवा कहा जाता है जबकि ऐसा नहीं करने वालों को सिबरी। कुछ हिजड़े हॉर्मोनल उत्पादों का भी इस्तेमाल करते हैं जिन्हें संडे-मंडे गोली कहा जाता है।

अफगानिस्तान

अफगानी क्वीर व ट्रांस अपनी पहचान शाख और मुरात के तौर पर करते हैं। हालांकि, जैसा कि ऐसे अधिकतर शब्दों के साथ होता है शाख और मुरात का वास्तविक अर्थ क्वीर व ट्रांस नहीं है।

शाख एक फारसी/दारी शब्द है जिसका मतलब होता है "सींग" और यह उन पुरुषों को दर्शाता है जो मर्दाना होते हैं और किसी एक लिंग की बजाय ये स्त्रियोचित गुणों वाले लोगों की ओर आकर्षित होते हैं।

मुरात, शब्द फारसी के शब्द मर्द (पुरुष) और औरत (महिला) को जोड़कर बना है। यह ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जिसमें मर्दाना व जनाना पहचान व भाव हैं।

बांग्लादेश

जैसा हमारे दो शोमुद्रो ऊपर विस्तार से बता चुके हैं कि बांग्ला भाषा में ऐसा कुछ नहीं है जो क्वीर या ट्रांसजेंडर की व्याख्या करता हो। ऐसा इसलिए नहीं है कि बांग्लादेश में हमारा अस्तित्व नहीं था बल्कि इसका ऐतिहासिक संदर्भ है कि बांग्लादेश औपनिवेशिक भारत का हिस्सा था। इस वजह से, आधुनिक भारत में इस्तेमाल होने वाली काफी शब्दावली बांग्लादेश में भी इस्तेमाल होती है जिसमें हिजड़े का उदाहरण भी शामिल है।

भूटान

ज़ोंगखा (भूटानी) भाषा के संरक्षण एवं उसका प्रसार करने के लक्ष्य से स्थापित संगठन ज़ोंगखा विकास आयोग ने 2015 में भाषा में निम्नलिखित शब्द जोड़े थे:

- उभयलिंगी/द्विलिंगी - ཟུང་སྤྱོ ར།
- समलैंगिक पुरुष/गे- མཚུངས་སྤྱོ ར།
- इंटरसेक्स - མ་ཉེ ད།
- समलैंगिक महिला/लेस्बियन - མོ ་སྤྱོ ར།
- ट्रांसजेंडर - མཚན་སྒྱུར།
- विलिंगी वेशधारी- སྤྱོ ད་སྒྱུར།
- समलैंगिकता- འདྲ་སྤྱོ ར།
- समलैंगिकता का डर - མཚུངས་སྤྱོ ར་ཞེན་ལོ ག།

भारत

भारत में हिजड़ा शब्द के कई भौगोलिक संस्करण है जिनकी अपनी अनूठी पहचान है। उदाहरण के लिए, दक्षिण एवं पश्चिमी भारत में जोगप्पा/जोगता ऐसे लोग होते हैं जो जन्म के समय पुरुष होते हैं लेकिन बाद में उनमें स्त्रियोचित गुण आ जाते हैं और इन्हें देवी येल्लम्मा का अवतार माना जाता है। तमिलनाडु में ट्रांसजेंडर महिला को तिरुनंगई यानी"सम्मानित महिला" कहा जाता है। तेलुगू भाषा में हिजड़ों को कोज्जा कहा जाता है। ट्रांसजेंडर या ट्रांससेक्शुअल का प्रतिनिधित्व करने के लिए शिव—शक्ति और अरावणी जैसे शब्दों का भी उपयोग होता है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में ट्रांसजेंडर पुरुष पुजारी के लिए नूपा माइबी शब्द उपयोग होता है जिसका मतलब है "पुरुष पुजारिन"।

उस स्त्रैण पुरुष को कोठी कहा जाता है जो पुरुषों की ओर आकर्षित हो और संभोग के दौरान वह ग्रहणशील भूमिका धारण करता है। कोचीन में रहने वाले कोठी को धुरानी कहा जाता है। पश्चिमी शब्दावली में इन्हें ट्विंक कहा जाता है।

पंथी, उस पुरुष को कहा जाता है जो पुरुषों की ओर आकर्षित होता है और संभोग के दौरान वह ऊपर रहना पसंद करता है। उन्हें "मर्दाना" समझा जाता है और वे खुद को भी बेहद मर्दाना ढंग से पेश करते हैं। इस दौरान हमें इससे भी प्राचीन शब्द मिले लेकिन आधुनिक भारत में उनका उपयोग बहुत कम किया जाता है। स्वैरिणी का अर्थ होता है स्वतंत्र महिला और अक्सर यह समलैंगिक महिलाओं के संदर्भ में उपयोग किया जाता है। इसी तरह, सिस्जेंडर समलैंगिक पुरुष के लिए किल्बा शब्द का प्रयोग होता है। बाइसेक्शुअल यानी द्विलिंगी/उभयलिंगी लोगों के लिए कामी शब्द का उपयोग होता है।

मालदीव

मालदिवियन भाषा, जिसे धिवेही भी कहा जाता है, में शोध करने से हमें उसमें क्वीर और ट्रांसजेंडर व ट्रांससेक्शुअल लोगों को दर्शाने वाले निम्नलिखित शब्द मिले:

- गे/समलैंगिक पुरुष - ލިވާޓު
- लेस्बियन/समलैंगिक महिला - ލެސްބިއަން
- ट्रांसजेंडर - ޓްރާންސްޖެންޑަރ
- बाईसेक्शुअल/उभयलिंगी/द्विलिंगी - ބައިސެކްޝުއަލް“
- क्वीर - ކުއީރ

नेपाल

नेपाल में क्वीर और/या ट्रांस को दर्शाने के लिए कई अलग-अलग शब्दों का उपयोग होता है।

माना जाता है कि मेती शब्द की उत्पत्ति भारत के दार्जिलिंग में हुई थी और यह एक कहावत से लिया गया है जिसका अर्थ होता है "अपनी प्यास बुझाना"। मेती, उस स्त्रैण पुरुष को कहा जाता है जो पुरुषों की ओर आकर्षित हो और संभोग के दौरान नीचे (बॉटम) रहना पसंद करता है। संभोग के दौरान नीचे रहना मेती होने का मुख्य गुण होता है क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि उनकी लिंग अभिव्यक्ति हमेशा स्त्रियोचित ही हो। फुलुमुलु, शब्द का इस्तेमाल भी ऐसे ही लोगों के लिए किया जाता है और इसका अधिकतर उपयोग पूर्वी नेपाल में होता है। हिजड़ा शब्द का उपयोग नेपाल में भी होता है।

तास, ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो जन्म के समय पुरुष है, खुद को पुरुष के तौर पर ही देखता है, पुरुषों की ओर आकर्षित होता है और संभोग के दौरान ऊपर रहना पसंद करता है। तास होने का महत्वपूर्ण हिस्सा है कि वे संभोग के दौरान पेनिट्रेटिव (प्रवेशक) भूमिका में रहते हैं।

नेपाली व उसकी बोलियों में अधिक आधुनिक शब्द विकसित किए गए हैं, जो क्वीर व ट्रांस होने की पश्चिमी अवधारणा को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए:

- गे- पुरुष समलिंगी
- लेस्बियन- महिला समलिंगी
- बाइसेक्शुअल- द्विलिंगी
- इंटरसेक्स- अंतरलिंगी
- ट्रांसजेंडर या थर्ड जेंडर- तीसरो लिंगी

पाकिस्तान

पाकिस्तान में क्वीर और ट्रांस लोगों को दर्शाने के लिए उर्दू में शब्द हैं। ख्वाजा सारा, एक व्यापक शब्द है जो हिजड़ों, ट्रांसजेंडर महिलाओं व नपुंसकों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह हिजड़े का समतुल्य उर्दू शब्द है और वे बधाई सहित उन सभी परंपराओं का हिस्सा होते हैं जिनके बारे में ऊपर बताया गया है। पाकिस्तान (और भारत) के पंजाब प्रांत में ख्वाजा सारा के लिए खुसरा शब्द इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि, अक्सर इसका उपयोग अपमानजनक ढंग से होता है। कई खुसरा मानते हैं कि उनके शरीर में किसी महिला की आत्मा है और इसलिए वे अधिक स्त्रियोचित व्यवहार करते हैं।

खुनसा मुश्किल, उसे कहा जाता है जिसे पुरुष या महिला के तौर पर परिभाषित करना मुश्किल होता है। पश्चिमी शब्दावली में यह ऐंड्रागाइनस/उभयलिंगी के समतुल्य होता है।

पाकिस्तान में मुरात/मूरात शब्द का भी उपयोग किया जाता है। जैसा कि हमने अफगानिस्तान वाले भाग में बताया है कि शब्द उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिनमें मर्दाना और जनाना, दोनों ऊर्जाएं होती हैं और वे खुद भी ऐसे ही अभिव्यक्त करते हैं। पुरुषों के साथ संभोग करने वाले स्त्रैण पुरुषों के लिए जनाना शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

श्रीलंका

श्रीलंका का नच्छी समुदाय बहुत ही दिलचस्प और बहुआयामी समूह है जो आसान वर्गीकरण को चुनौती देता है। उनका इतिहास सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संदर्भों में गहराई से जुड़ा हुआ है, जिससे उनकी पहचान बहुत जटिल और महत्वपूर्ण हो जाती है। श्रीलंका में"नच्छी" शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर ट्रांसजेंडर लोगों के लिए किया जाता हैै। कुछ नच्छी बताते हैं कि वे पिछले जन्म में महिलाएं थे और उनकी मौजूदा पहचान उनके उसी अनुभव का परिणाम है। कुछ लिंग पुष्टिकरण की प्रक्रिया से नहीं गुज़रने का विकल्प चुनते हैं और बदले में स्त्रियोचित लैंगिक विचारों का जश्न मनाते हैं और अपने शरीर से जुड़ी 'मर्दानगी' के मुख्य पहलुओं को स्वीकार कर लेते हैं। नच्छी शब्द का उपयोग गे समुदाय भी उन स्त्रैण पुरुषों के लिए उपयोग करता है जो खुद को पुरुष बताते हैं और पुरुषों की ओर आकर्षित होते हैं। नच्छी मुख्य रूप से पुरुषों के साथ ही रिश्ते बनाना चाहते हैं और उनके अस्तित्व का इतिहास कई सदियों पुराना है।

नच्छी समुदाय का प्रजनन की हिंदू देवी के साथ प्राचीन काल के संबंध हैं। नपुंसक बनकर वे अर्ध–पूजनीय दर्जा हासिल कर लेते हैं और नवविवाहित जोड़ों को प्रजनन व नवजात को स्वास्थ्य का आशीर्वाद दे सकते हैं। तमिल भाषाई उत्तरी प्रांत में क्रॉस ड्रेसिंग सांस्कृतिक तानेबाने का हिस्सा है जिससे पुरुषों में स्त्रियोचित गुण होना बहुत अजीब नहीं लगता है।

कुछ ट्रांसजेंडर लोगों ने सुझाव दिया है कि ट्रांसजेंडर समुदाय को सिंहल शब्द समरिसी का इस्तेमाल करना चाहिए। लेकिन इसे विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि यह शब्द समलैंगिक रिश्तों को अभिव्यक्त करता है। अन्य ने सुझाव दिया है कि समुदाय को संक्रांति शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए जिसका सिंहल भाषा में मतलब होता है ट्रांसजेंडर।

आभार सहित समापन

तो, हमने आपको बता दिया है! हम उम्मीद कर रहे हैं कि हमने आपको दिखा दिया है कि क्वीर या ट्रांस होना "श्वेत लोगों की बात" नहीं है; यह बहुत हद तक "भूरे लोगों की बात" भी है या "मनुष्य की बात" है।

दक्षिण एशिया के औपनिवेशीकरण से पहले, हमारी पहचान को प्रेम व स्वीकार्यता मिलती थी, दुलार मिलता था और कई बार सम्मान भी। लेकिन औपनिवेशीकरण ने इसे बदल दिया। इसने हमारे लोगों को हमारे खिलाफ खड़ा कर दिया और हमें उनकी घृणा व आक्रोश का सामना करना पड़ा।

हालांकि, यह इतिहास हमें दिखाता है कि ज़रूरी नहीं चीज़ें इसी तरह चलती रहें। हमारे लोग एक बार फिर हमें प्रेम, स्वीकार्यता व दुलार दे सकते हैं। उन्होंने ऐसा करना शुरू भी कर दिया है। लेकिन वे ऐसा करने में तभी सक्षम हो सकेंगे जब हम स्वयं के एक हिस्से को नहीं बल्कि अपने पूरे व्यक्तित्व से प्रेम करना शुरू कर दें। हम उम्मीद करते हैं कि इस सामग्री ने आपको दिखाया होगा कि कैसे हमारे पूर्वज और उनके समाज एक समय में यौन, लैंगिक, जातीय और धार्मिक वैविध्य के साथ शांतिपूर्वक तरीके से रह रहे थे। वास्तविकता है कि उन्हें इसके लिए प्यार किया गया। हम भी यह हासिल कर सकते हैं।

अभी के लिए हम इसे यहीं पर छोड़ते हैं लेकिन जाने से पहले हम आपको कुछ अभिपुष्टियों के साथ छोड़कर जाना चाहते हैं:

- मैं किसी को भी अपनी संस्कृति मुझसे छीनने या यह मुझसे यह कहने की अनुमति नहीं दूंगा/दूंगी कि मेरी पहचान, मेरी जातीयता या मेरे धर्म के अनुरूप नहीं है। मेरे क्वीर और ट्रांस पूर्वज मुझे देखकर मुस्कुरा रहे हैं। उन्हें मुझ पर गर्व है।
- मेरी पहचान कई पीढ़ियों के दौरान बनी है। उसकी जड़ें मेरे स्वदेसी इतिहास और मेरे लोगों के इतिहास में हैं।
- मेरे पूर्वजों के कार्यों और प्रेम ने मुझे मुक्त किया है।
- मैं अपने सभी हिस्सों और उनके महत्व को स्वीकारता/स्वीकारती हूं।

संदर्भ

चिंता मत कीजिए; इस स्त्रोत में दी गई जानकारी मनगढंत नहीं है- इसे कैसे तैयार किया जाए इसके लिए हमने काफी शोध और सोच-विचार किया है। इसकी जानकारी जुटाने के लिए हमने जिन स्रोतों की सहायता ली है उनकी सूची नीचे दी गई है:

"Happiness and Harmonization – LGBT Laws in Bhutan" Salzburg Global Seminar <www.salzburgglobal.org>.

Ahmad Qais Munhazim "Afghan Muslim Aunties and Their Queer Gifts" (2023) 46(1) South Asia: Journal of South Asian Studies 206.

Akhilesh Pillalamarri "Afghanistan's Love-Hate Relationship With Homosexuality" (2016) The Diplomat <www.thediplomat.com>.

Alamgir "Khawaja Sara and Hijra: Gender and Sexual Identity Formation in Postcolonial Islamic Pakistan" (2023, Masters thesis, RMIT University).

Amit Gerstein ""So What Are You?": Nepali Third Gender Women's Identities and Experiences Through the Lens of Human Rights Development Discourse" (2020) 3 The GW Undergraduate Review 18.

Amit Kumar Singh "From Colonial Castaways to Current Tribulation: Tragedy of Indian Hijra" (2022) 40(2) Unisia 297.

An Ordinance to Provide a General Penal Code for Ceylon 1883.

Andrea Nichols "Dance Ponnaya, Dance! Police Abuses Against Transgender Sex Workers in Sri Lanka" (2010) 5(2) Feminist Crimonology 195.

Aruni Hemanthi Wijayath "Recognition of Transgender Community in Domestic Legal Regime: A Comparative Analysis between Sri Lanka and India" (2020) 1(1) KnowEx Journal of Social 41.

Bipasha Chakraborty "Vikriti Evam Prakriti: What seems unnatural, is natural" (2021) Honi Soit <honisoit.com>.

Buggery Act 1533.

Criminal Tribes Act 1871.

Dzongkha Development Commission (2015) <www.facebook.com>.

Gayathri Reddy With Respect To Sex: Negotiating Hijra Identity In South India (University of Chicago Press, 2005).

Hoshang Merchant Yaraana: Gay Writing from South Asia (Penguin Books India, 2010).

Jody Miller and Andrea Nichols "Identity, sexuality and commercial sex among Sri Lankan nachchi" (2012) 15(5/6) Sexualities 554.

John Leupold “To Be, or Not to Be, in Bhutan” (2016) The Gay and Lesbian Review <glreview.org>.

Kaushalya Ariyarathne “Priest, Woman and Mother: Broadening the Horizons through Transgender/nachchi Identities in Sri Lanka” (2022) 43(2) Sri Lanka Journal of the Humanities 19.

Kaushalya Ariyarathne “To be or Not to be Seen? Paradox of Recognition among Trans Men in Sri Lanka” (2021) 15 Masculinities Journal of Culture and Society 66.

Kenneth Ballhatchet Race, Sex and Class under the Raj: Imperial Attitudes and Policies and Their Critics, 1793-1905 (Weidenfeld and Nicholson, 1980).

Lopamundra Sengupta Human Rights of the Third Gender in India: Beyond the Binary (Routledge India, 2023).

Maura Reynolds “Kandahar’s Lightly Veiled Homosexual Habits” (2002) Los Angeles Times <www.latimes.com>.

Offences against the Person Act 1861.

Pashtun Sexuality (Human Terrain Team (HTT) AF-6, Research Update and Findings).

Rohit Dasgupta Digital Queer Cultures in India: Politics, Intimacies and Belonging (Routledge India, 2019).

Ruth Vanita and Saleem Kidwai “Rekhti Poetry: Love between Women (Urdu)” in Ruth Vanita and Saleem Kidwai (eds) Same-Sex Love in India: Readings in Indian Literature (Palgrave MacMillian, 2000) 220.

Ruth Vanita Queering India: Same-Sex Love and Eroticism in Indian Culture and Society (Routledge, 2002).

Saittawut Yutthaworakool “Understanding the Right to Change Legal Gender: A Case Study of Trans Women in Sri Lanka” (2020, Masters thesis, Global Campus Asia-Pacific).

Santhushya Fernando, Senel Wanniarachchi and Janaki Vidanapathirana Montage of Sexuality in Sri Lanka (UNFPA and College of Community Physicians of Sri Lanka, 2018).

Shakthi Nataraj “The Thirunangai Promise: Gender as a Contingent Outcome of Migration and Economic Exchange” (2022) 19 Anti-Trafficking Review 47.

Shraddha Chatterjee “Transgender Shifts: Notes on Resignification of Gender and Sexuality in India” (2018) 5(3) TSQ: Transgender Studies Quarterly 311.

Sushmita Gonsalves “A Constructed Sexuality: Re-Discovering the Jogappas of South and West India” (2022) 2(1) Skylines of Anthropology 45.

Swakshadip Sarkar “Dissecting Universality of Homosexual Identity Formation From West Bengal’s Frame of Reference” (2020, unpublished paper).

UNDP and Williams Institute Surveying Nepal’s Sexual and Gender Minorities: An Inclusive Approach (Bangkok, 2014, UNDP).

Walter Penrose “Colliding Cultures: Masculinity and Homoeroticism in Mughal and Early Colonial South Asia” in Katherine O’Donnell and Michael O’Rourke (eds) Queer Masculinities, 1550-1800: Siting Same-Sex Desire in the Early Modern World (Palgrave Macmillan, 2006) 1550.